



पारंपरिक वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह पारंपरिक रूप से परिचित पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाओं के भीतर तय किए जाते थे। हालांकि, आधुनिक कुंडलियों में ऐसे योग तेजी से दिखाई दे रहे हैं जो रूढ़िवादी कुल-परंपरा की सीमाओं को तोड़ते हैं - जो अंतरजातीय, अंतरधार्मिक, अंतर-सांस्कृतिक या सीमा-पार (विदेशी) विवाह के रूप में प्रकट होते हैं।

ऐसे विवाह तब होते हैं जब सीमाओं को तोड़ने वाले ग्रह, मुख्य रूप से राहु - संबंध भावों (7वें और 12वें) के साथ जुड़ते हैं, या जब स्वाभाविक आकर्षण के कारक ग्रह (मंगल और शुक्र) पारंपरिक सामाजिक बंधनों को पीछे छोड़ देते हैं।

पुष्टि का नियम: कम से कम 3 नियमों का मेल

गैर-पारंपरिक या अंतरजातीय विवाह पारंपरिक मान्यताओं से एक बड़ा बदलाव है और केवल किसी एक ग्रह स्थिति के आधार पर इसका फलादेश नहीं किया जा सकता। अंतरजातीय या गैर-पारंपरिक विवाह की संभावना की पुष्टि के लिए कुंडली में निम्नलिखित संयोजनों में से कम से कम 3 का मिलना आवश्यक है।

1. राहु का सीमाएं तोड़ने वाला प्रभाव

राहु विदेशियों, बहिष्कृतों, अपरंपरागत जीवन शैलियों और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का मुख्य कारक है:

- 7वें भाव और 7वें भाव के स्वामी से जुड़ा राहु:** जब राहु 7वें भाव में स्थित हो, 7वें भाव पर दृष्टि डालता हो या 7वें भाव के स्वामी (सप्तमेश) के साथ युति बनाता हो, तो यह जातक को उसके पारंपरिक सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक दायरे से बाहर के जीवनसाथी की ओर आकर्षित करता है।
- 6ठे या 11वें भाव में शुक्र और राहु:** विशेष रूप से महिला कुंडलियों में, उपचय/त्रिक भावों में शुक्र (आकर्षण/इच्छा) और राहु (अपरंपरागतता) की युति गैर-पारंपरिक प्रेम संबंधों के प्रति गहरा झुकाव पैदा करती है।
- 9वें भाव में या धनु राशि में राहु:** 9वां भाव और धनु राशि पारंपरिक धर्म, पारिवारिक मान्यताओं और सामाजिक धर्म को नियंत्रित करते हैं। यहां स्थित राहु सीधे तौर पर स्थापित परंपराओं के खिलाफ जाता है, जिससे स्वतंत्र और अंतर-सांस्कृतिक विवाह को प्राथमिकता मिलती है।

2. मंगल और शुक्र की युति (परंपरा पर हावी प्रेम)

मंगल ऊर्जावान आवेग और साहस प्रदान करता है, जबकि शुक्र प्रेम और आकर्षण का कारक है:

केंद्र भावों में मंगल और शुक्र या 12वें भाव में युति:

- केंद्र भावों (1ले, 4थे, 7वें, 10वें) में:** एक तीव्र प्रेम भावना और मजबूत व्यक्तिगत स्वतंत्रता का निर्माण करता है जो सामाजिक अपेक्षाओं को खुलकर चुनौती देता है।
- 12वें भाव में:** व्यक्तिगत इच्छाओं को विदेशी परिवेश, अपरंपरागत निकटता और पैतृक रीति-रिवाजों से अलगाव के साथ जोड़ता है।

3. त्रिक भाव और संबंध अक्ष की स्थितियां

- 6ठे या 8वें भाव में चंद्रमा और मंगल:** चंद्रमा सामाजिक सोच और पारिवारिक संस्कारों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि मंगल साहसिक कदमों का कारक है। जब ये 6ठे या 8वें भाव में स्थित हों, तो जातक अपने भावनात्मक निर्णयों के लिए पारिवारिक विवाद या सामाजिक विरोध का सामना करने को तैयार रहता है।

- **8वें भाव में मंगल:** महिला कुंडलियों में अक्सर देखा जाने वाला यह तीव्र मंगल दोष (Mangal Dosha) अक्सर एक अपरंपरागत विवाह मार्ग का संकेत देता है, साथ ही जीवनसाथी के समग्र स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति को लेकर सावधानी बरतने की सलाह भी देता है।
- **7वें भाव और 12वें भाव के स्वामियों की युति:** 7वें भाव (विवाह) का 12वें भाव (सुदूर देश, विदेशी मूल और स्थानीय रीति-रिवाजों से दूरी) के साथ संबंध, पूरी तरह से भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विदेशी राष्ट्रियता या समुदाय के व्यक्ति से विवाह का मजबूत संकेत देता है।

4. विशिष्ट राशि और ग्रह स्थितियां

- **तुला (Tula) या कुंभ (Kumbha) में 7वें भाव में बृहस्पति:** यद्यपि बृहस्पति पारंपरिक ज्ञान का ग्रह है, लेकिन इसे तुला (साझेदारी और निष्पक्षता) या कुंभ (अपरंपरागतता, सामाजिक सुधार और मानवतावादी सोच) जैसी प्रगतिशील, वायु तत्व प्रधान राशियों में रखने से जीवनसाथी के चयन के प्रति एक खुला और गैर-रूढ़िवादी दृष्टिकोण उत्पन्न होता है।
- **7वें भाव में मीन (Meena Rashi) लग्न:** जब 7वां भाव मीन राशि में पड़ता है (कन्या लग्न), तो साझेदारी का भाव गुरु के विस्तार, सार्वभौमिक सहानुभूति और सीमाओं से परे संबंध को अपनाता है, जो पारंपरिक सामाजिक भेदों से ऊपर उठकर देखता है।

<https://astroarpitanath.com/hindi/inter-caste-and-non-traditional-marriage/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।